तर्ज- आ लौट के आ जा मेरे मीत

करो मूलमिलावे का ध्यान,जहां परआत्म बैठी है
जहाँ बैठे हैं श्री श्यामाश्याम,जहाँ परआत्म बैठी है

1- चौंसठ थंभ जहां चार द्वार हैं,थंभों से उठत जो नूर
नूर नूर सो जंग करे है,जानो शीतल उग्यो कोटि सूर
ए खिलवत है नूर भरी,जहां परआत्म...

2-तले गिलम है ऊपर है चंद्रवा,तकियों की शोभा है न्यारी
तकियों के साथ भराये के बैठी,बैठक इन्हों की बड़ी प्यारी
बैठी रूहें जहाँ बारह हज़ार,जहां परआत्म...

3-पछिम में सिहांसन राजश्यामाजी को,चारों चरण अति प्यारे
एक चरण है नूर की चौकी पे,दूजा बांई जांघ धरे
अब चरणों में करूं प्रणाम,जहां परआत्म...

4- दहशत है दिल में हो न जुदाई,बैठी गले डाल बईयां
अंक सो अंक भराये के बैठीं,बैठीं ज्यों दाड़िम की कलियां
अपनी बैठक करो अब याद,जहां परआत्म...

5- हृदय में चढ़ चढ़ आवे पिया जी,बैठक जो मूल मिलावे
इश्क हमारा हमको लौटा दो,करूं मीठी मैं तुमसों बातें
सुख खिलवत के आवें याद,जहां परआत्म...

Nijanand App